संख्या-443/2020/3004/22-2-2029-17(1099)/2019 टी.सी.

प्रेषक,

करूणेश कुमार सिंह,
संयुक्त सचिव
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 ***लखनऊ दिनांक 15 अक्टूबर, 2020***

विषय:- केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी पीरबाबा सलीम पुत्र श्री कबीर, निवासी जनपद-बिजनौर की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक अपने पत्र संख्या-35064/प्रोवेशन-3/फार्म-ए(एम-19.09.2019) दिनांक-03.12.2019 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- आपके उक्त पत्र द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी पीरबाबा सलीम पुत्र श्री कबीर, पानीबाग, थाना-नजीबाबाद, जनपद-बिजनौर का निवासी है। शकीर (सहअभियुक्त) तांत्रिकों पर विश्वास करता था और पीरबाबा सलीम के प्रभाव में उसके कहे अनुसार काम करता था। शकीर दिनांक 19/20.05.2002 की रात्रि पत्नी मैसरजहां व 04 बच्चों के साथ छत पर सो रहा था। पत्नी के छत से नीचे जाने पर रात्रि लगभग 03:00 बजे अपने 04 बच्चों की गर्दन पर गंड़ासे से मारकर हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-708/2002 में भा0द0वि0 की धारा-302, 120बी0 के अन्तर्गत मा0 अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश-कोर्ट संख्या-04, मुरादाबाद के आदेश दिनांक 24.03.2006 द्वारा आजीवन कारावास से दण्डित किया गया है। बन्दी द्वारा दिनांक 22.08.2019 तक 17 वर्ष 03 माह 01 दिन की अपरिहार सजा तथा 20 वर्ष 01 माह 14 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। जिला मजिस्ट्रेट, बिजनौर की अध्यक्षता में सम्पन्न समिति की बैठक दिनांक 16.05.2018 एवं मा0 उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बंदी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है। प्रोबेशन बोर्ड का अभिमत है कि बन्दी ने अपने सहअभियुक्त शकीर से दिनांक 19/20.05.2002 की रात्रि लगभग 03:00 बजे 04 बच्चों की हत्या कराये जाने का जघन्य अपराध कारित किया गया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी का अपराध व्यक्ति विशेष तक सीमित अपराध की श्रेणी में न होने का अंकन जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में किया गया है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता, जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोवेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी पीरबाबा सलीम पुत्र श्री कबीर को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अतः इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

3- उपरोक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी पीरबाबा सलीम (बन्दी संख्या-11703) पुत्र श्री कबीर, निवासी जनपद-बिजनौर के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट,1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति श्री राज्यपाल द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतद्द्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

करूणेश कुमार सिंह
संयुक्त सचिव।

संख्या-443/2020/3004(1)/22-2-2019 तद्दिनांक

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, बिजनौर।

2- वरिष्ठ अधीक्षक, केन्द्रीय कारागार, आगरा।

3- निजी सचिव, मा0 राज्य मंत्री, कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग, उ0प्र0 को मा0 मंत्री को सूचनार्थ।

4- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

कृष्ण कुमार सिंह
अनु सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

शासनादेश संख्या-443/2020/3004/22-2-2029-17(1099)/2019 टी.सी.

दिनांक 15 *अक्टूबर*, 2020 का संलग्नक

सरकार के आदेश

केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी पीरबाबा सलीम पुत्र श्री कबीर, पानीबाग, थाना-नजीबाबाद, जनपद-बिजनौर का निवासी है। शकीर (सहअभियुक्त) तांत्रिकों पर विश्वास करता था और पीरबाबा सलीम के प्रभाव में उसके कहे अनुसार काम करता था। शकीर दिनांक 19/20.05.2002 की रात्रि पत्नी मैसरजहां व 04 बच्चों के साथ छत पर सो रहा था। पत्नी के छत से नीचे जाने पर रात्रि लगभग 03:00 बजे अपने 04 बच्चों की गर्दन पर गंड़ासे से मारकर हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-708/2002 में भा0द0वि0 की धारा-302, 120बी0 के अन्तर्गत मा0 अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश-कोर्ट संख्या-04, मुरादाबाद के आदेश दिनांक 24.03.2006 द्वारा आजीवन कारावास से दण्डित किया गया है। बन्दी द्वारा दिनांक 22.08.2019 तक 17 वर्ष 03 माह 01 दिन की अपरिहार सजा तथा 20 वर्ष 01 माह 14 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। जिला मजिस्ट्रेट, बिजनौर की अध्यक्षता में सम्पन्न समिति की बैठक दिनांक 16.05.2018 एवं मा0 उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बंदी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है। प्रोबेशन बोर्ड का अभिमत है कि बन्दी ने अपने सहअभियुक्त शकीर से दिनांक 19/20.05.2002 की रात्रि लगभग 03:00 बजे 04 बच्चों की हत्या कराये जाने का जघन्य अपराध कारित किया गया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी का अपराध व्यक्ति विशेष तक सीमित अपराध की श्रेणी में न होने का अंकन जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में किया गया है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता, जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोवेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी पीरबाबा सलीम पुत्र श्री कबीर को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त श्री राज्यपाल द्वारा बंदी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई अस्वीकार कर दी गयी है।

करूणेश कुमार सिंह
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अतः इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।